मातृभूमि **मैथिलीशरण गुप्त**

HSSLiVE.IN

भूमिका:

भारत की स्वतंत्रता लाखों के परिश्रम का फल है। तत्कालीन साहित्यकार भी अपने साहित्य के सहारे देशप्रेम को प्रोत्साहन देकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई। हम यहाँ ऐसी एक कविता का आस्वादन करेंगे।

कविता की ओर...

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गातपि गरीयसी" अर्थात भारतीय परंपरा के अनुसार जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बेहतर है। भारतवासियों केलिए देशप्रेम केवल भावना नहीं, सच्चाई है। हमारी मातृभूमि का गुणगान करनेवाली यह कविता देशकेलिए अपनी जान अर्पित करने की आह्वान भी करती है।

कवि के बारे में......

द्विवेदी युगीन प्रतिभाशाली कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव में सन् 1885 में हुआ। भारतीय पुरानों में उपेक्षित कथा प्रसंगों एवं पात्रों को लेकर युगानुरूप काव्य उन्होंने रचे। साकेत, यशोधरा, पंचवटी आदि उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ है।

प्रश्नों का उत्तर कविता से ढूँढ़ें:

(I) नीलांबर परिधान .... हीरे कहलाए।

(1) समानार्थी शब्द कवितांश से चुनकर लिखें।

आकाश	- अबर	वस्त्र	- परिधान
नक्षत्र	- तारा	प्रदेश/किनारा	- तट
करधनी	- मेखला	समुद्र	- रत्नाकर
स्तुतिपाठक	- बंदीजन	पक्षी	- खग
बादल	- पयोद	आत्मसमर्पण	- बलिहारी
आभूषण	- मंडन	लुढ़कना	- लोटना
रेंगना	- सरकना	धूलि	- धूल

(2) मातृभूमि का परिधान क्या हैं?

मातृभूमि का परिधान नीले रंग का आकाश हैं।

(3) मातृभूमि का मुकुट क्या-क्या है?

सूर्य और चंद्र मातृभूमि का मुकुट हैं, जो दिन और रात में मातृभूमि के ऊपर शोभित रहते हैं।

(4) कवि ने समुद्र का वर्णन किस प्रकार की है?

कवि ने समुद्र को मातृभूमि के करधनी के रूप में वर्णन किया है।

(5) कवि ने नदियों का चित्रण किस प्रकार की गई हैं?

नदियाँ भारतवासियों केलिए प्रेम का प्रवाह हैं, जो निस्वार्थ स्नेह की धारा बहाती हैं।

(6) मातृभूमि के आभूषण क्या-क्या हैं?

फूल और तारे मातृभूमि का आभूषण है।

HSSLIVE.IN

(7) मातृभूमि की करधनी क्या हैं?
समुद्र मातृभूमि की करधनी हैं।

(8) मातृभूमि कैसे शोभित हैं?
नीलांबर रूपी वस्त्र पहनकर, हरियाली से भरे तट पर, सूर्य और चंद्र का मुकुट धारण करके सागर रूपी करधनी पहनकर मातृभूमि शोभित है।

(9) मातृभूमि का सिंहासन क्या हैं?
शेष नाग के फन।

(10) भारतमाता किस पर विराजमान हैं?
शेषनाग के फन रूपी सिंहासन पर भारतमाता विराजमान है।

(11) शेषनाग के फन को क्यों मातृभूमि का सिंहासन कहा गया हैं?
हिंदु मिथक के अनुसार शेषनाग के फन पर धरती माता स्थित हैं। शेष अर्थात अनंत प्रकृति का प्रतीक हैं। कवि यहाँ मिथक के सहारा लिया है, जिसके अनुसार शेषनाग के फन ही इस धरती अर्थात हमारी मातृभूमि का सिंहासन हैं।

(12) मेघ क्या कर रहे हैं?
मेघ मातृभूमि पर अभिषेक कर रहे हैं।

(13) मेघ मातृभूमि पर किसका अभिषेक करता है?
मेघ मातृभूमि पर वर्षा का अभिषेक करता है।

(14) कवि अपनी मातृभूमि केलिए क्या करना चाहता हैं?
कवि अपनी मातृभूमि केलिए आत्मसमर्पण करना चाहता हैं।

(15) कवि अपनी मातृभूमि केलिए आत्मसमर्पण करना चाहता है?
कवि अपनी मातृभूमि के सुदंर सगुण मूर्ति पर आत्मसमर्पण करना चाहता है।

(16) कवि अपने मातृभूमि केलिए आत्मसमर्पण करना चाहता हैं, क्यों?
कवि अपने मातृभूमि केलिए आत्मसमर्पण इसलिए करना चाहते हैं कि मातृभूमि सर्वेश के सगुण साकार मूर्ति हैं।

(17) कवि किसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं?
अपने मातृभूमि के रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।

(18) हम भारतवासी कैसे बड़े हुए हैं?
अपने मातृभूमि के धूलि में लोट-लोटकर हम बड़े हुए हैं।

DO NOT COPY

HSSLIVE.IN

(19) हम भारतवासी कैसे खड़े हुए है?
घुटनों के बल पर इस मातृभूमि में सरक-सरक कर ही हम खड़े हुए हैं।

(20) कवि को बाल्यकाल में किस तरह की सुख पाए?
श्रीरामकृष्ण परमहंस जैसा सुख पाए।

(21) किसके कारण कवि को धूल भरे हीरे कहलाए?
मातृभूमि के कारण ही कवि को धूल भरे हीरे कहलाए।

(II) हम खेले-कूदे ..... मिल जाएगी।

(1) समानार्थी शब्द कवितांश से ढूँढकर लिखें।

देखना	- निरखना	लीन	- मग्न
अनुभव करना	- भोगना	मोद	- हर्ष
शरीर	- देह	घुलना	- सनना
वक्त	- समय	निर्जीव	- अचल

(2) हम भारतवासी कहाँ खेले-कूदे हैं?
हमारी मातृभूमि के प्यारी गोद मे।

(3) हम भारतवासी कैसे हर्ष का अनुभव करते हैं?
हम अपने मातृभूमि की प्यारी गोद में खेल-कूद कर हर्ष का अनुभव करते हैं।

(4) भारतवासी कैसे आनंदविभोर हो जाते हैं?
अपनी मातृभूमि को देखकर हम भारतवासी आनंदविभोर हो जाते हैं।

(5) मातृभूमि ने हमें क्या-क्या उपकार किए?
जो सुख और संतोष हम भारतवा**सी** भोगते है, **वे** सब मातृभूमि की ही देन हैं। हमारा शरीर मातृभूमि से बनी हुई है। इसके सुरस-सार से सने होकर हम पला हैं।

(6) हमारे शरीर **किससे बनी हुई है**?
हमारा शरीर मातृभूमि **के ही बनी हुई है। उसके सुरस सार से सनी हुई है।**

(7) मातृभूमि केलिए कवि क्या करना चाहता हैं?
कवि मातृभूमि केलिए आत्मसमर्पण करना चाहता है।

(8) हमारे अंत कैसे होती है?
अंत में जब शरीर अचल हो जाएँगे तब हम सब इस मिट्टी में ही विलीन हो जाएँगे। अतः मातृभूमि में उसकी कृपा से पला हुआ यह शरीर अचल होने पर वही भूमि ही स्वीकार करेगा।

DO NOT COPY

HSSLIVE.IN

मेरी खोज:-

(1) दो शब्दों के मेल से बने हुए अनेक शब्द कविता में हैं। उन्हें चुनकर लिखें।

जैसेः
- नीलांबर - नीले रंग का अंबर
- सूर्य-चंद्र - सूर्य और चंद्र
- खग-वृंद - खगों का वृंद
- बंदीजन - बंधन में रहनेवाले लोग
- बाल्यकाल - बचपन का समय
- हर्षयुत - हर्ष से युत
- मातृभूमि - माता रूपी भूमि
- प्रेम प्रवाह - प्रेम का प्रवाह

(2) कवि ने मातृभूमि का वर्णन किस प्रकार किया हैं?

द्विवेदी युग के प्रतिभाशाली कवि हैं श्री मैथिलीशरण गुप्त जी। पुराणों में उपेक्षित कथा प्रसंग एवं पात्रों, खासकर उपेक्षित स्त्री पात्रों के लेकर युगानुरूप काव्य उन्होंने रचे। 'मातृभूमि' गुप्त जी की प्रसिद्ध कविता है, जो देशभक्ति से भरी हैं और हमें प्रेरणा भी देती हैं। कवि केलिए मातृभूमि सिर्फ भूमि मात्र नहीं बल्कि प्रेरणा देनेवाली सगुण साकार मूर्ति भी हैं।

मातृभूमि के हरियाली तट नीलाकाश रूपी वस्त्र पहनकर अत्यंत शोभित हैं। सूर्य-चंद्र रूपी मुकुट, फूल-तारे रूपी आभूषण और समुद्र रूपी करधनी से मातृभूमि की शोभा बढ़ाती हैं। मातृभूमि की स्तुति करने केलिए पक्षीगण है। शेषनाग के फन रूपी सिंहासन पर भारत माता विराजती हैं। बादल पानी बरसाकर इसका अभिषेक करता हैं।

(3) मातृभूमि से कवि का बचपन कैसे जुडे हुए हैं?

मैथिलीशरण गुप्त की महत्वपूर्ण विचारों से ओत-प्रोत कविता हैं मातृभूमि। अपनी मातृभूमि का वंदना करते हुए कवि कहते हैं कि यहाँ के पवित्र धूल में लोट-लोट कर वे बड़े हुए हैं। फिर घुटनों के बल पर सरक-सरक कर ही वे पैरों पर खड़ा रहना सीखा। इस पुण्य भूमि में रहकर बचपन में ही परमहंस जैसे सब सुखों को भोग लिया हैं।

इसकी प्यारी गोदी में आमोद से खेलकर हर्ष का अनुभव किया हैं। अतः कवि का बाल्यकाल मातृभूमि से जुडा हुआ हैं। मातृभूमि ही उसे आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी हैं।

(4) 'तेरे प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा' – कवि इस प्रकार क्यों सोचता हैं?

भारतीय परंपरा के अनुसार जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। महाकवि कालिदास ने बताया है – 'जननी जन्मभूमिश्च सर्गातऽपि गरीयसी'।

माँ अर्थात जन्मभूमि सर्वंसहा हैं, दयामयी हैं, वात्सल्यमयी एवं क्षमामयी हैं। मातृभूमि एक माँ की तरह अपना सर्वस्व देकर अपने बच्चों का पालन पोषण किया। हम सब भारतीय इस मातृभूमि की धूल में लोट-लोट कर बड़े हो गया हैं, घुटनों के बल पर सरक-सरक कर खड़े रहना सीखा। मातृभूमि द्वारा हम भारतीयों केलिए दी गई सुख और खुशी अन्यत्र दुर्लभ हैं। ऐसे त्यागमयी माँ द्वारा बच्चों को की गई उपकारों का बदला देने केलिए हम असमर्थ है।

DO NOT COPY

HSSLiVE.IN

अनुवर्ती कार्य:
कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

द्विवेदी युग के प्रतिभाशाली कवि हैं श्री मैथिलीशरण गुप्त जी। पुराणों में उपेक्षित कथा प्रसंग एवं पात्रों, खासकर उपेक्षित स्त्री पात्रों के लेकर युगानुरूप काव्य उन्होंने रचे। 'मातृभूमि' गुप्त जी की प्रसिद्ध प्रेरणादायक कविता है, जिसमें अपने जन्मभूमि का गुणगान करके उसकेलिए अपने जान भी देने का आह्वान करते हैं।

अपने जन्मभूमि का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि इसकी हरियाली केलिए नीलाकाश एक सुंदर वस्त्र की तरह शोभित हैं। सूर्य और चंद्र एक मुकुट की तरह दिन-रात उसकी शोभा बढ़ाती हैं। सागर उसकी करधनी हैं। यहाँ बहनेवाली नदियाँ प्रेम का प्रवाह है, फूल-तारे इसकी शोभा बढ़ानेवाला आभूषण हैं। पक्षियाँ स्तुति-गीत गाते हैं, आदिशेष का सहस्र फन रूपी सिंहासन पर तू विराजित हैं। बादलों पानी बरसाकर इसका अभिषेक करते रहते हैं। वास्तव में तू सगुण साकार मूर्ति हैं। कवि अपनी जन्मभूमि की इस सुंदर रूप पर आत्म-समर्पण करते हैं।

जन्मभूमि से कवि का बचपन का संबंध व्यक्त करते हुए आगे कवि कहते हैं इसके धूल में लोट-लोट कर वे बड़े हुए हैं। घुटनों के बल पर यहाँ सरक-सरक कर ही पैरों पर खड़ा रहना सीखा। यहाँ रहकर बचपन में ही उसने श्री रामकृष्ण परमहंस की तरह सभी आनंद पाए। इसके कारण ही उसे धूल भरे हीरे कहलाए। इस जन्मभूमि की प्यारी गोदी में खेल-कूद करके हर्ष का अनुभव किए। ऐसे मातृभूमि को देखकर हम आनंद से मग्न हो जाती हैं।

आगे कवि कहते है जो सुख-शांति हमने भोगा हैं, वे सब तुम्हारी ही देन हैं। तुझसे किए गए उपकारों का बदला देने केलिए हम बच्चे अशक्त हैं। यह देह तेरा है, तुझसे ही बनी हुई हैं, तेरे ही जीव-जल से सनी हुई है। अंत में मृत्यु होने पर इस निर्जीव शरीर तू ही अपनाएगा। हे मातृभूमि! तुझ में जन्म लेकर, तुझमें पलकर, अंत में हम सब तेरे ही मिट्टी में विलीन हो जाते हैं।

सरल शब्दों में कवि मातृभूमि की खूबियों की ओर हमें आकृष्ट करके उसकेलिए अपना जान अर्पित करने की प्रेरणा देती हैं।

अतिरिक्त प्रश्न:

(1) मातृभूमि कविता पढ़नेवाली एक छात्रा, अपने उस दिन की ड़ायरी में क्या लिखा होगा। कल्पना करके लिखें।

11-6-2015 बुधवार

द्वितीय वर्ष का प्रथम हिंदी कक्षा। हमारे प्रिय अध्यापक जी को पिछले साल के अंत में ही स्थानांतरण मिला था। आज द्वितीय वर्ष की पहली कक्षा, एक नए अध्यापक या अध्यापिका की प्रतीक्षा में। हम सब के मन व्याकुल थे। हिंदी पाठ पुस्तक के पन्ने पलटने पर बहुत विरस दिखाई पड़ा।

चौथे घंटे हिंदी था। सब के पेट में चूहे दौड़ रहे थे। अध्यापक जी आया। औपचारिक परिचय के बाद वे सीधे पाठ-पुस्तक की ओर गया। पहला पाठ एक कविता था, श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का 'मातृभूमि'। उसने वह कविता बहुत सुरीली ढ़ंग से प्रस्तुत किया। फिर उसकी व्याख्या की। बहुत सुंदर कविता, हमारे मन देश स्नेह से भर गया। जी हाँ, भारत माता का त्याग, प्यार आदि का वर्णन ज़्यादा हैं। हम सब भारत माता के बच्चे हैं। भारत जैसे महान देश में पैदा होने का अवसर मिलने पर हम कृतार्थ हुए।

एक घंटे कैसे बीत गया, मुझे मालुम नहीं। नए अध्यापक अपने छात्रों के मन को चुरा लिया। हाँ, अब गृहकार्य करने का समय हैं। शुभरात्री.....

HSSLiVE.IN

(2) मान लें आपकी कक्षा में अध्यापक 'मातृभूमि' कविता पढ़ चुकी है। इतने में एक नए छात्र आपकी कक्षा में प्रवेश पाकर आती है, जो अपने पिताजी के ट्रांस्फर के कारण यहाँ आयी है। मातृभूमि कविता के बारे में आप अपने नए मित्र से कहती है। वह वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

HSSLiVE.IN

सुरेश : अरे, राहुल, हमारी कक्षा तुम्हारा स्वागत कर रही है।
राहुल : धन्यवाद, अब किस कालांश है?
सुरेश : हिंदी।
राहुल : हिंदी! मुझे पुस्तक नहीं मिला था।
सुरेश : नए पाठ-पुस्तक हम को भी नहीं मिला।
राहुल : फिर कैसे पढ़ूँ।
सुरेश : हम ने फोटोस्टाट लिया है। कल अध्यापिका जी ने पहले पाठ पढ़ाए।
राहुल : कौन-सा पाठ?
सुरेश : "मातृभूमि।" कविता है। देशस्नेह और माँ की प्यार एवं ममता भरी सुंदर कविता।
राहुल : फिर...
सुरेश : हम में अपनी माँ एवं देश से प्यार बढ़ानेवाली कविता है।
राहुल : मैं कैसे पढ़ूँ?
सुरेश : घबराओ मत, हमें अध्यापिका जी की सहायता मिलेगी।
राहुल : ठीक है।

DO NOT COPY

HSSLiVE.IN